केन्द्रीय विद्यालय संगठन

संभाग – वाराणसी
संकलन मूल्यांकन द्वितीय (2014–15)
अंक योजना
विषय : हिन्दी

कक्षा – X पूर्णांक :90

(खण्ड 'क')

प्र.1	(i)	(क)	(ii)	(ख)	(iii)	(घ)	(iv)	(ग)	(v)	(क)	1x5=5
प्र.2	(i)	(क)	(ii)	(ग)	(iii)	(ख)	(iv)	(घ)	(v)	(ख)	1x5=5
प्र.3	(i)	(ख)	(ii)	(घ)	(iii)	(ग)	(iv)	(क)	(v)	(ग)	1x5=5
प.4	(i)	(ग)	(ii)	(घ)	(iii)	(घ)	(iv)	(क)	(v)	(ग)	1x5=5

(खण्ड 'ख')

प्र.5 क. अव्यय, क्रियाविशेषण, रीतिवाचक। 1

ख. संज्ञा, भाववाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, संबंध कारक, जीतना क्रिया से संबंध। 1

ग. सर्वनाम, पुरुषवाचक, मध्यम पुरुष, पुल्लिंग, बहुवचन, करना क्रिया से सम्बन्ध। 1

घ. अव्यय, विस्मयादिबोधक, हर्ष सूचक। 1

प्र.6 क संयुक्त वाक्य 1

ख. सरल वाक्य 1

ग. शशि नाच –गा रही थी। 1

प्र.7 क. कर्त्तृवाच्य 1

ख. कवि ने कविता पढ़ी। 1

ग. हिरन से तेज दौड़ा जाता है। 1

घ. भाववाच्य। 1

प्र.8 क. भक्ति रस 1

ख. रौद्र रस 1

ग. वात्सल्य रस 1

घ. वीर रस 1

प्र0.9 (i) (ख) (ii) (ख) (iii) (ग) (iv) (घ) (v) (क)

अथवा

(i) (ख) (ii) (क) (iii) (ख) (iv) (घ) (v) (ग) 1x5=5

प्र.10क. सकारात्मक प्रभाव। प्राध्यापिका के निर्देश का पालन कर ही लेखिका चयनात्मक पठिका बन सकी। सही गलत की समझ विकसित कर सकी। निर्णय लेने में सक्षम हो सकी। सही–गलत का निर्णय, खेल, पाठ्य, सहगामी क्रियाओं, राजनीति में भागीदारी। 2

ख. पुराने समय में स्त्रियों का प्राकृत भाषा बोलना उनके अपढ़ होने का सबूत नही है। प्राकृत एक भाषा है। उस भाषा का ज्ञान प्राप्तकर्ता उसी प्रकार साक्षर होने का अधिकारी है जैसे अन्य भाषाओं से साक्षर व्यक्ति। 2

ग काशी विश्वनाथ के प्रति अपार श्रद्धा, 2

हिन्दू मुस्लिम धार्मिक कार्यक्रमों में सहभागिता एवं सम्मान, सदा जीवन

घ. आवश्यकता अविष्कार की जननी है, भोजन की व्यवस्था हेतु। ठंड से बचने, अंधकार दूर करने आदि। 2

ड. असंस्कृति। आत्मसुरक्षा की भावना कुत्सित रूप धारण कर आत्म विनाश की ओर मुड़ जाती है जो मानव संस्कृति को असंस्कृति की ओर मोड़ देती है। आत्मसुरक्षा स्वीकार्य है परन्तु आत्मविनाश निन्दनीय। 2

प्र.11क. पृथ्वी को राजाओं से छीनकर ब्राह्मणों को दे दी, सहसबाहु राजा को मार डाला आदि। $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}$

ख. हजार 1

ग. राजा दशरथ 1

घ. ड़ीगें हाँकने वाला 1

ड़ नष्ट करने वाला

अथवा

क. गिरिजा कुमार माथुर एवं छाया मत छूना $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}$

ख. साहस क्षीण हो जाता है और आगे बढ़ने का रास्ता नही दिखता है। 1

ग. जो न मिला भूल उसे, कर तू भविष्य वरण, 1

घ. बीती बातों को याद करने से वर्तमान जीवन और कष्टप्रद हो जाता है साहस क्षीण हो जाता है अतः वर्तमान में कठिन परिश्रम करके अपना जीवक सुखमय बना लेना चाहिए आदि। 1

ड. तत्पुरुष 1

प्र.12क. परसुराम के क्रोध का मूलकारण शंकर भगवान के धनुष का टूटना था परसुराम शंकर भगवान के भक्त थे। उनके आराध्य का धनुष टूटना उनके सम्मान को छति पहुँचाना था। यह सोच कर ही परसुराम को क्रोध उत्पन्न हुआ। 2

ख. यथार्थ के पूजन अर्थात् वर्तमान में कठिन परिश्रम करके ही भविष्य को सुखमय बनाया जा सकता है आदि। 2

ग. अपने गुरू का सम्मान, अहं न करना, विनम्रता आदि। 2

घ. लड़की होना अर्थात्, एक सद्चारिणी, विनम्र एवं कर्तव्य परायण होना तथा लड़की जैसा दिखाई न देना अर्थात सामान्य लड़कियों जैसे कोमल, 2

अन्याय को सहन कने वाली व धनलोलुप न होना आदि।

ड़	साहस और शक्ति दोनो गुण मानव को विशिष्ट बनाते हैं वही विनम्रता के साथ साहस और शक्ति का प्रयोग हो तो व्यक्ति यश को प्राप्त करता है।	1
प्र.13	स्वविवेकानुसार	5

(खण्ड 'घ')

प्र.14	प्रस्तुतिकरण	4
	विषय वस्तु	4
	भाषा की शुद्धता	2
प्र.15	पत्र की औपचारिकता	2
	विषयवस्तु	2
	भाषा की शुद्धता	1
प्र.16	स्वविवेकानुसार	5